रेशम कपास पर संकट

[स्रोत: द हिंदू](#)

राजस्थान में **आदिवासी धार्मिक परंपराओं, विशेषकर होलिका-दहन** अनुष्ठानों में अत्यधिक उपयोग के कारण **रेशम कपास के पेड़** (बॉम्बैक्स सीबा एल/Bombax ceiba L.) खतरे में हैं।

- इसे **सेमल या भारतीय कपोक वृक्ष या संस्कृत में शाल्मली** भी कहा जाता है।
  - आदिवासी लोग होलिका में इस वृक्ष को जलाने के कार्य को एक पुण्य अनुष्ठान के रूप में देखते हैं।
  - वर्ष **2009 में उदयपुर ज़िले में होली के दौरान लगभग 1,500-2,000 पेड़ों काटकर** आग लगा दी गई।
- यह वृक्ष मुख्य रूप से **नम पर्णपाती और अर्द्ध-सदाबहार जंगलों में मैदानी इलाकों** में भी पाया जाता है।
  - भारत में वृक्षों की यह प्रजाति **आमतौर पर अंडमान और निकोबार द्वीप, असम, बिहार, केरल, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, ओडिशा, पंजाब, राजस्थान तथा उत्तर प्रदेश** में मिलती है।
- यह पेड़ **उच्च औषधीय महत्त्व** का है; इसकी जड़ों और फूलों का उपयोग इनके उत्तेजक, कसैले एवं हेमोस्टैटिक गुणों के लिये किया जाता है। इसका उपयोग **कामोत्तेजक, दस्त को रोकने, दिल को मज़बूत करने, सूजन को कम करने, पेचिश का इलाज करने तथा बुखार दूर करने** के लिये किया जाता है।
  - इसमें **जीवाणुरोधी और एंटीवायरल गुण** भी होते हैं, यह दर्द से राहत देता है, लीवर की रक्षा करता है, **एंटीऑक्सीडेंट** के रूप में कार्य करता है तथा रक्त शर्करा के स्तर को कम करता है।
  - इसका उपयोग **[कृषि वानिकी](#) में पशुओं के चारे के लिये** भी किया जाता है। जहाज़ निर्माण के लिये इसकी लकड़ी मज़बूत, लचीली और टिकाऊ होती है।
- **राजस्थान की कथोड़ी जनजाति ढोलक और तंबूरा जैसे संगीत वाद्ययंत्रों** के लिये इस लकड़ी का उपयोग करती है तथा भील समुदाय द्वारा इसका उपयोग रसोई के चम्मच बनाने के लिये किया जाता है।

और पढ़ें: [आदिवासी आजीविका की स्थिति (SAL) रिपोर्ट, 2022]

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/silk-cotton-tree-under-threat